छत्तीसगढ़ के खेल गीत एवं पारंपरिक खेल

❑ नम्रता ठाकुर

शारीरिक एवं मानसिक विकास का सबसे महत्वपूर्ण कारक है खेल । जिसके लिए न तो किसी भाषा-विशेष की जानकारी की आवश्यकता है और न ही किसी क्षेत्र-विशेष का होना आवश्यक। खासकर छत्तीसगढ़ के खेल तो ऐसे ही हैं । उदाहरणार्थ बांटी और गिल्ली डंडा मैदानी खेल होने के बावजूद किसी निश्चित आकार प्रकार के मैदान के मोहताज नहीं । और तो और खिलाड़ियों की संख्या घटाने-बढ़ाने से भी इन खेलों की सेहत बनी रहती है ।

उपरोक्त विशेषताएं एवं अनुशासन विश्व के अनेक खेलों में एक बार पाये भी जा सकते हैं किन्तु छत्तीसगढ़ में इन सबके अलावा भी खेलों द्वारा बालक बालिकाओं को जो जीवन दर्शन की बातें बतायी जाती हैं, संस्कारों की शिक्षा दी जाती है और तो और जीवन की जो व्यवहारिक बातें बतायी जाती हैं, वे अनूठी हैं।

भाद्र मास अमावस्या के दिन मनाये जाने वाले 'पोला' (पोला पाटन) त्यौहार में लड़के बैल व लड़कियां 'चूकी पोरा' (गृहस्थी के खिलौने)खेलती हैं । दूसरे अर्थों में लड़कों के लिए बैल, हल, खेत यानि कृषि कार्य एवं लड़कियों के गृहस्थी संबंधी कार्य बंट जाते हैं और वे खेल-खेल में ही अपनी जीविका एवं भविष्य के विषय में जानकारियां प्राप्त करते चलते हैं ।

जहां एक ओर कब्बड़ी, और नागपंचमी में होने वाला दंगल बच्चों को शारीरिक मजबूती प्रदान करता है, वहीं दूसरी ओर डंडा पचरंगाबांटी, फुगड़ी व 'जनऊला' गणित संबंधी होने के कारण उनके मानसिक व्यायाम के साधन सिद्ध होते हैं ।

छत्तीसगढ़ में मैदानी खेल ही नहीं अपितु आन्तरिक खेल भी प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं तथा इनकी प्रमुख विशेषता इन खेलों के दौरान गाये जाने वाले गीत होते हैं । ऐसा ही एक बड़ा आम-सा प्रतीत होने वाला खेल है किन्तु यदि इसके गेय शब्दों पर गौर किया जाये तो इसमें जीवन का सबसे बड़ा सत्य छिपा है । बच्चों के लिए ऐसी दार्शनिक बातों का संग्रह विश्व में शायद ही कहीं वर्णित हो।

''अटकन मटकन दही चटक्का''

शास्त्रों के अनुसार मनुष्य को यह मानव शरीर 84 लाख योनियों के बाद मोक्ष प्राप्ति हेतु सद्कार्य करने के लिए मिला है। इस संसार में आने के पूर्व मनुष्य गर्भावस्था में मां की कोख में उलटा लटका हुआ, ईश्वर से अपनी मुक्ति की प्रार्थना करता हुआ, अनेक कष्टों को भोगते हुए इस श्रेष्ठतम योनि को जल्द से जल्द प्राप्त करना चाहता है। किन्तु इस संसार में आते ही ईश्वर को भूलकर, इस बात को बिसराकर कि एक न एक दिन उसे मृत्यु को प्राप्त होना है सांसारिक माया मोह में पड़कर यहीं अटक जाता है और सुख- समृद्धि, ऐश्वर्य-भोग-विलास को ही सत्य मानकर 'भटकने' अर्थात इतराने लगता है, अपनी क्षणभंगुरता को भुलाकर अभिमानी हो जाता है ।

'दही चटाका' अर्थात-जिस प्रकार दही खाने पर जिव्हा चटकारे लेती है वैसे ही मनुष्य सुस्वादु पदार्थों का लालची हो जाता है दूसरे अर्थों में जिव्हा याने इंद्रियों के वश में हो जाता है । यहां दही का अर्थ इससे भी लिया जा सकता है कि जन्म से लेकर मृत्यु तक कर्म-कांडो में दही की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि इसके ठीक बाद की पंक्तियों में मृत्यु का ही वर्णन है ।

'लहुआ लाटा, बनगे कांटा'

'लहुआ लेना' यानि जल्दी जल्दी करना, जल्दबाजी करना, किसी कार्य को जल्दी करने के लिए बार-बार कहना । जब किसी मनुष्य की मृत्यु होती है तो उसकी शवयात्रा एवं दाहसंस्कार के लिए सब जल्दबाजी करते हैं । 'बनगे काँटा' मतलब जीवित अवस्था में जो मनुष्य आपको सर्वाधिक प्रिय था, जीते जी जिस पर आप प्राण न्यौछावर करते थे जब वही व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त होता है तो जिस प्रकार हम शरीर में गड़े हुए कांटे को जल्दी से जल्दी अपने शरीर से अलग करना चाहते हैं उसी प्रकार लोगों को उस मृत देह को घर से बाहर ले जाने की हड़बड़ी या जल्दी रहती है मानो वह काँटा बन गया हो।

'तुहूर तुहूर पानी अवे, सावन मां करेला फूले'

सावन के महीने में वर्षा सर्वविदित है और करेला कुंवार या कार्तिक अर्थात् ठण्ड में फूलता है, अतएव यहां अर्थ यह है कि चाहे सावन का बारिश भरा मौसम हो या कड़कड़ाती ठण्ड हो करेला फूलता और फलता है ।

'चल चल बिटिया गंगा जाबो'

(हमें मृतात्मा की शांति हेतु गंगा तीर जाना ही होगा ।)

'गंगा ले गोदावरी' - फिर गंगा और गोदावरी अर्थात यहां पर गोदावरी नदी की महत्ता को बताया गया है । दूसरे अर्थ में गोदावरी को दक्षिण की गंगा भी कहा जाता है । जीवन चक्र क्या है ? उत्तर (गंगा) से दखिण (गोदावरी) तक आना जाना ही तो है यानि एक दिशा से दूसरी दिशा तक भ्रमण और बस जीवन की समाप्ति यहीं हो जाती है । इसके बाद की पंक्ति छत्तीसगढ़ में दो तरह से प्रचलित है, रायगढ़ और बिलासपुर क्षेत्रों में -

'पाका पाका आमा खाबों'

शायद इसका कारण यह हो कि गोदावरी नदी का कछार आम के बगीचों के लिए प्रसिद्ध रहा है और गोदावरी जाने के बाद पके आम खाना अर्थात् जीवन की मिठास की ओर लौटने से आशय है । बिलासपुर और रायगढ़ को छोड़कर शेष छत्तीसगढ़ में यह पंक्ति इस प्रकार से है -

'पाका पाका बेल खाबो'

जब मृत्यु ही जीवन का सत्य है तो पका पाका बेल यानि जीवन का सार तत्व ग्रहण करना चाहिए । यहां उल्लेखनीय है कि बेल का फल, फलों में अपने औषधियुक्त गुणों के कारण श्रेष्ठ माना गया है और दूसरे अर्थों में हमें जीवन में श्रेष्ठ वस्तुओं का उपभोग करना चाहिए, श्रेष्ठतम का चयन व प्राप्ति करनी चाहिए।

'बेल का डारा टूटेंगे'

अर्थात बेल जैसा औषधियुक्त सार तत्वों वाला दूसरों के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करने वाला, परमार्थी जनहितकारी व्यक्ति भी अन्ततः मृत्यु को प्राप्त होता ही है । दूसरे अर्थों में अमरत्व किसी को प्राप्त नहीं, एक ना एक दिन सभी को जाना है तो क्यों ना बेल बने, सत्कर्म करें ।

इस गीत की अन्तिम पंक्ति भी छत्तीसगढ़ में दो तरह से प्रचलित है । बस्तर में सिर्फ यही एक पंक्ति शेष छत्तीसगढ़ से भिन्न है । बस्तर में इसके बाद की पंक्ति है - 'बिहाती डैकी छूटगे'

अर्थात् विवाहित या ब्याहता स्त्री टूट गई कितने यथार्थ के धरातल में खड़ा है यह वाक्य, जन्म का संबंध तो ईश्वरीय होता है किन्तु वैवाहिक संबंध जिसे मनुष्य बहुत सोच-विचार कर, जांच परख कर बनाता है, अग्नि को साक्षी मानकर जनम जनम, सात जन्म या जन्म जन्मांतर के लिए बनाता है, वह पवित्र संबंध भी आखिरकार इसी जन्म में छूट जाता है । यहां यह बताना उचित होगा कि बस्तर में विधवा विवाह को मान्यता प्राप्त है। बस्तर को छोड़कर शेष छत्तीसगढ़ में यह पंक्ति इस प्रकार है -

'भरे कटोरा फूट में'

अर्थात जीवन के तमाम अनुभवों से लबालब, मृत्यु की सत्यता से परिचित होकर भी, या इसे धन वैभव से लें तो सर्वसाधन युक्त होते हुए भी, धन दौलत, मान प्रतिष्ठा, यश होने पर भी मृत्यु से कोई रक्षा नहीं कर सकता, कोई बचा नही सकता । यह तो शाश्वत सत्य है । जीवन दर्शन का इससे बड़ा उदाहरण हो सकता है भला ।

फुगड़ी

इसी प्रकार खास तौर से लड़कियों का एक खेल है फुगड़ी। शारीरिक स्फूर्ति बढ़ाने, पेट निकलने से रोकने, पाचन क्रिया को बेहतर बनाये रखने के साथ साथ इसमें जनसामान्य, सामाजिक व्यवहारिकता की जो जानकारियां बालिकाओं को दी जाती है वह देखते ही बनती हैं ।

'गोबर दे बछरू गोबर दे, चारो खुट ला लिपन दे'

गोबर के महत्व को बताता हुआ यह वाक्य घर के प्रत्येक हिस्से की सफाई की सिफारिश करता है ।

'चारो देरानी ला बैइठन दे'

संयुक्त परिवार में रहने की मानसिकता बचपन से बनाना और फिर देवरानी अर्थात रिश्ते में छोटे लोगों को भी मान सम्मान देना, बैठने को स्थान देना, छोटों का ख्याल रखना, दूसरे अर्थों में बड़प्पन का एहसास, बड़े होने की जिम्मेदारी निभाना ।

''अपन खाते गुदा गुदा, मोला देथे बीजा''

थोड़ा शिकायती स्वर या कष्टों को भी सहना पड़ सकता है इस बात का संकेत ।

''ये बीजा ला का करहू, रहि जाहूं तीजा''

शिकायत है पर संतोष भी है और संतोष को बड़ी खूबसूरती से धर्म के मान पर मोड दिया गया है । सर्वविदित है कि तीज (हरतालिका) का व्रत लड़कियों के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है ।

'तीजा के बिहान दिन सरी सरी लुगरा'

यहां यह स्पष्ट करना होगा कि पुराने समय में साड़ी दो तरह से प्रचलन में थी । पहली 'लुगड़ी' लम्बाई में छोटी होती थी तथा इसे लड़कियों (अविवाहित) द्वारा उपयोग में लाया जाता था और दूसरी 'लुगरा' यह लम्बाई में पर्याप्त होती थी इसे विवाहित महिलाओं द्वारा उपयोग में लाया जाता था । तो इस प्रकार इस व्रत तीजा के पीछे प्रलोभन भी है कि पूरे दिन के व्रत के बाद दूसरे दिन पूरी पूरी (पूरी लम्बाई की) साड़ी प्राप्त होगी । दूसरे अर्थ में धैर्य या संतोष का परिणाम बेहतर ही होता है ।

''चींव चांव करें मंजूर के पिला, हेर दे भौजी कपाट के खीला''

पुराने समय में लड़कियों का विवाह कम उम्र में हो जाया करता था और वे स्वयं के खेलने की उम्र में ही मातृत्व की जिम्मेदारी निभाने को विवश हो जाती थी । दूसरी ओर ननद भाभी के निकट संबंधों को भी यह पंक्ति दर्शाती है। एक समय एक अवस्था ऐसी भी आती है कि जब लड़कियां अपने मन की जो बातें मां से नहीं कह पातीं वह भी भाभी से कह जाती हैं, इसलिए वह भाभी से कपाट का खीला अर्थात दरवाजा खोलकर थोड़ी देर के लिए बच्चों के कोलाहल से मुक्त हो मिलने की इजाजत मांगती हैं ।

(एक गौड़ मां लाल भाजी, एक गौड़ मां कपूर, कतेक ला मानोमय देवर ससुर'

एक पैर में लाल भाजी अर्थात गृहस्थी का बंधन व दूसरे में कपूर अर्थात सुगंध जिसे बांधा न जा सके, जो सर्वत्र फैलने, विचारों को आतुर है ऐसे में देवर या ससुर के लिहाज में अपने बचपन का कब तक गला घोटूं और फिर भाभी से इजाजत लेकर वह उन्मुक्त होकर फुगडी खेलती है -''फूगड़ी कूं गई फुगड़ी फूं ।''

यहां यह बता देना आवश्यक है कि फुगड़ी खेलने के लिए कोई निश्चित स्थान की आवश्यकता नहीं है । बच्चों को सिर्फ खेलना या खेल में जीवन-दर्शन व सामाजिक जानकारियां मिलती हैं ऐसा नहीं है । वह स्वयं भी सोचने समझने लायक है तभी तो छत्तीसगढ़ में प्रचुर मात्रा में जनऊला (पहेलियां) भी मौजूद हैं । जनऊला मनोरंजन के साथ साथ बौद्धिक विकास का भी माध्यम हैं । ◆